Vol 4 Issue 6 March 2015

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 ISSN No.2249-894X

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldror.lbp.world

Review Of Research
ISSN:-2249-894X
Impact Factor : 3.1402(UIF)
Vol. 4 | Issue. 6 | March. 2015
Available online at www.lbp.world

आनन्दरामायण के भगवन्नामों की महिमा और लोक कल्याण के संदर्भ में

डॉ. पुष्पा देवी[1] , डॉ. शिव बालक द्विवेदी[2]

[1]असिस्टेण्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग श्री मन्नू लाल द्विवेदी महाविद्यालय सहार, औरैया।
[2]असिस्टेण्ट प्रोफेसर संस्कृत विभाग डी.ए.वी. महाविद्यालय कानपुर

सारांश–

''श्रीमद भागवत में न केवल मनुष्यों के लिये इस प्रकार प्रभु के नामों में नेत्र, मुख, पाद, एवं कर को सर्वत्र कमल से उपमित किया गया है। आनन्दरामायण का संकेत यह है कि भगवान् की दृष्टि के समान ही उनकी कृति गति एवं उक्ति में सर्वत्र कमलवत् निर्विकारता एवं पक्षपातहीनता है। इसी प्रकार अरूणोंष्ठोक्षणाधरः भगवान उनको फल देते है तथा कभी कभी भवन्तभावानुसार ही भाववित् या भावबन्धु भगवान धर्मसंस्थापन के लिये भावग्रम्य प्रभु तदन्सार ही विविध शरीरों में अवतार लेते है। भगवान का स्व (अपना) भावतोसु (सुन्दर) भाव ही होता है। यहां अवतारोचित स्वभाव परक भगवन्नामों को तान्त्विकों निर्वचन प्रस्तुत हैं।

मत्स्यः कूर्मो बराहश्च नृसिंहो वामनस्तथा।
रामो रामश्च कृष्णश्च बुद्ध कल्किरेण व ।।

(वराह. अ.4) इस दशावतारबो कइस श्लोक के अनुसार दशावतारोचिज स्वभावपरक भगवन्नामों का तान्त्विक निरूपण प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के 5 वें अध्याय के प्रत्यक्षलीलाधारित विशिष्ट भगवन्नामों के अवसर पर किया जा चुका है। अतः असंगोपात्त होने पर अज्ञान न तो सत् है और न असत है, यदि सत् होता तो सर्वदा सत् रहता और कदापि बाधित नहीं होता परन्तु ऐसा नहीं होता है क्योंकि ब्रह्म का ज्ञान हो जाने पर अज्ञान नष्ट हो जाता है यदि अज्ञान असत् नहीं होता। तो व जड़ पदार्थो के आभास का कारण नहीं होता। जिसकी स्वयं की ही सत्ता नहीं वह किसी वस्तु का कारण किसी प्रकार हो सकता है, चूंकि उसकी प्रतीति होती है अतः उसे असत् भी नहीं कहा जा सकता सच्चेन्नबाध्येत असच्चेन्न प्रतीयेत इस प्रकार माया सत और असत दोनो से यह माया न तो सत् रूप है न असत् रूप है और न सद्सदुभय रूप है न भिन्न है न अभिन्न है और न भिन्नाभिन्नोयरूप है न सांग है न निरडग और न साड्गनड्गोभय रूप है। यह अत्यन्त अद्भुत और अनिर्वचनीय रूप वाली इसकी व्याख्या नहीं की जा सकती है–

''सन्नाप्यसन्नाप्युभयात्मिका नो, भिन्नाडप्यभिन्नग्प्यु भयात्मिका नो।
सांगाडप्यनंगाप्युभयात्मिका नो महाद्भूताडनिर्वचनी रूरूपा।।''

ज्ञान विरोधी– अज्ञान या माया ज्ञान विरोधी है। माया भाव रूप होने पर भी ब्रह्य ज्ञान के पश्चात् नष्ट हो जाती है गीता में भी कहा गया है–

प्रस्तावनाः–

मीमांसा में धर्म का जो सर्वोच्च स्थान था उसे परवर्ती काल में मोझ ने ले लिया। कुमारिल के अनुसार धर्म एक साधन है और स्वर्ग उसका फल है, परन्तु कालान्तर में उसका स्थान मोझ ने ले लिया। प्रभाकर मोझ को स्वयं साध्य मानता है। अतः उनके धर्म के स्थान पर मोझ का नवीन स्थान प्रतिष्ठित हुआ। इस प्रकार जैमिनि के मत के मोझ का कोई स्थान नहीं होते हुये भी आत्मा

का अपने से भिन्न वस्तुओं से सम्बन्ध होना बन्ध है मीमांसा में तीन बन्धनों का उल्लेख किया गया है, जो आत्मा को बांधते है ये तीन है– भोगायतन शरीर योग साधन इन्द्रिय भोग आत्मा को बांधते है, मीमांसा में तीन बन्धनों का जो भोग विषय शब्दादि विषय तथा जगत आदि। आत्मा अनादि काल से ही इन तीनों बन्धनों में पडी रहती है और नाना प्रकार के कष्टों का अनुभव करती है इसी बन्धन के कारण ही वह सुख दुख आदि विषयों का उपयोग करता है, इसे ही भव बन्धन कहा गया है भव बन्ध के कारण ही पुनर्जन्म को धारण करता है और जन्म–मरण के चक्र में धुमता है इस प्रकार सांसारिक बन्धनों में उद्विग्न होकर वह उससे छुटकारा पाने का प्रयास करता है इन्हीं त्रिविध बन्धनों से सदा के लिये मुक्त हो जाता है इसे ही मोझ कहा जाता है प्रभाकर केवल दुःख की निवृति को ही नहीं अपितु सुख दोनों की ही समाप्ति कों मोझ कहते है। वह परमानन्द की अवस्था को मोझ नहीं मानता उनके मत में आत्मा का प्राकृ तिक रूप अवस्थित हो जाना मोझ है कुमारिल के अनुसार समस्त दुःखों से रहित तथा त्रिविध बन्धनों से मुक्त होकर आत्मा का अपने स्वरूप में अवस्थित हो जाना मोझ है कुमारिल आनन्द की अवस्था को मोझ नहीं मानते।

मुक्तावस्था में आत्मा समस्त प्रकार के दुःखों से सर्वथा शून्य हो जाता है मन इन्द्रिय और शरीर से उसका सम्बन्ध सदा के लिये छूट जाता है। इस प्रकार धर्म–अधर्म क्षय होने पर आत्मा का नाश हो जाता है, तथा भविष्य में नये शरीर की उत्पत्ति होती है, यही मुक्तावस्था है इस अवस्था में ज्ञान, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयन्त धर्म और अधर्म से शून्य होकर आत्मा अपने स्वरूप में अवस्थित हो जाता है।

भगवान श्रीकृष्ण ने सन्यास और कर्म योग में कर्मयोग की प्रशंसा की है–

''सन्यासः कर्म योगश्च निःश्रेयसकरावुमें।
तपोस्तु कर्मसन्यासात् कर्मयोग विशिष्यते।।''

इस प्रकार कर्म की सत्ता एवं उसकी सर्वातिशयिनी महत्ता को ध्यानस्थ कर ही मीमांसको ने उस (कर्म) में भगवन्ता का आरोपण या प्रतिष्ठापन किया है।

(क)– भगवन्नामो की महिमा–

अनन्त सा. का. 5125 भगवान के अनन्त नामों सा. का. 6/27 की महिमा के अनन्त है। भगवान् का एक नाम हरिः है सर्वपापहरो हरिः सा.का. 7/27 में हरि को समस्त पापों का अपहर्ता कहा गया है सा.का. 6/21 में तीनों लोको की पीडा को हरने के कारण हरि नाम पडा। हरिर्हरति पापानि दृष्टचित्तैरयि स्मृतः में दूषित चित्त से भी स्मरण किये जाने पर हरि पापों को हर लेते है। 811130 में हरित्यिहृतों येन कहकर व्यास जी ने हरि के नाम में हरणशीलता की ही अभिव्यक्ति की है, वामनपुराण में नारायण नाम के सुनने मात्र से अनेक जन्मों की कमायी हुई समस्त पापराशि को हरने के कारण नारायण के नर के रूप में एक प्रसिद्ध चोर कहा गया है जैसा कि इस श्लोक से स्पष्ट है–

''नारायणों नाम नरो नराणां प्रसिद्धचौरः कथितः पृथिव्याम्
अनेक जन्मोर्जित पाप संचयं हरत्यशेषं श्रुतमात्र एवं।।

नाम लेते भवसिन्धु सुखाही नाम कोटि खल कुमति सुधारी, भव भय भंजन नाम प्रतापू जन मन अमित नाम किये पावन नामु सकल कलि कलुष निकंदन, नाम अधारे अमित नाम किये पावन नामु, सकल कलि कलुष निकंदन नाम उधारे अमित मुकुत हरि नाम प्रभाऊ कहौ कहां लगि नाम बडाई।
राम न सकहिं नाम गुन गाई। नाम गुन गाई।

मानस (बाल.दो.24 से 26 तक) भगवान के अनन्त नामों की महिमा की अनन्तता तथा वर्णनाततिता के विषय में पं. बलदेव उपाध्याय का मन्तव्य दृष्टव्य है–

''शास्त्रों में जहां जहां ईश्वर की महिमा का उनके प्रभाव का वर्णन है उसे नाम की ही महिमा सझमनी चाहिये, कयोंकि नाम और नामी में कोई भेद नहीं है (श्रीमद्भागवत में महिमा और प्रार्थना कल्याण वर्ष 39)

''परम कृपालु प्रभू के पवित्र नाम को हमारे शास्त्रों ने कलियुग का मुख्य धर्म माना है इसके अतिरिक्त अन्य जो जो धर्म हैं वे जिनसे बन सके, उनके लिये परन्तु कल्याणकारी प्रभु का मंगल नामस्मरणा तो सभी के लिये है।

''मनुष्य जब असाध्य व्याधियों से घिर कर पराधीन होकर मरणशय्या पर सोता है उस समय योग यज्ञ व्रत तप, स्नान, ध्यान, पाठ, पूजा,देव दर्शन आदि करने या किसी भी नियम के पालन की उसमें शक्ति नहीं रहती। ये सभी साधन उत्तम है परन्तु उस समय सामर्थ्य न होने के कारण उसके लिये सभी निरूपयोगी हो जाते है।

भवसागर में डूबते हुये प्राणी के लिये वह नौका है, मोझमार्ग के प्रवासी का वह सच्चा मित्र है अन्तकरण में रमने वाली मलिवासनाओं का नाश करने के लिये दिव्य औषधि है वह भक्तों का दिव्य भूषण है और ऋषियों का परम धन है उसे जानने वाले जीवन्मुक्त होते है। आनन्दरामायण में यचास्थान भगवान राम के नाम महत्व एवं प्रभाव वर्णित है राम नाम की महिमा के सम्बन्ध में राज्यकण्ड के चौदहवें अध्याय के श्लोक संख्या 117 से 175 तक जी श्रीराम से इस प्रकार कहते है, हे राम–

राम नाम पारिजात में कहा गया है–

नाम रामस्य प्रख्यातं लोक कल्याण कारकम्।
जयति जयति जगन्मंगलं हरेनमि।

जयति जयति जगन्मंगलं हरेनमि।।

जय हो! जय हो! जगत के मंगल करने वाल हरिनाम की जय हो। जय हो।'' कल्याणकारी भगवन्नाम, कल्याण वर्ष 39)

(ख) प्रसिद्ध नामाचार्य भक्तः–

भारतीय भक्ति साहित्य में भगवन्नाम के जय अथवा स्मरण तथा कीर्तन का सर्वाधिक महत्व है। इस कोटि (वर्ग) में जो लब्धप्रतिष्ठ नामोपासक (भक्त) आचार्य हुये है, उनके नामों का परिगणनात्मक परिचय प्रस्तुत करना सम्प्रति प्रसंगोपान्त होने से मुझे शोधकर्ती का कर्म भी है और धर्म भी। सर्वप्रथम भगवान शिव को ही देखे जिनके मुख्य में अहर्निश राम नाम विराजित रहता है। मॉ पार्वती के शब्दों में–

''तुम पुनि राम राम दिन राती।
सादर जपहुं अनंग आराती।। (चरित मानस)

• नारायण नाम उच्चारण कर अजामिल मुक्त हो गया। जिसकी जिह्वा भगवन्नाम या उनके गुणों का कीर्तन नहीं करती जिसका चित्त भगवच्यरणों में एक बार भी नहीं झुकता उसी दृष्ट को यहां (यमपुरी में) पकडकर ले आओ, अपने दूतों से यह कहना निश्चितत्वेन उन (यमराज) की नामोपासकता का प्रमाणक है। आदिकवि महर्षि बाल्मीकि का नाम नाम की अमित महिमा का गान करते हुये, त्वन्नामकीर्त्या हृतकल्मषाणाम् तथा राम त्वन्नामहिमा वर्ष्यते केन वा कथम् (अध्यात्म. अयोध्या. 6/63/4) कहना निःसंदेह नामोपासक आचार्यत्व की संज्ञा से संवलित करता है जान आदि कवि नाम प्रतापू। भयउ सुद्ध करि उलटा जापू तथा उलटा नाम तपत जग जाना (मानस बाल0) कहकर गो0 तुलसीदास जी के द्वारा तथा अन्यत्र कथित कूंजन्तं राम रामेति के द्वारा बाल्मीकि जी की नामप्रियता ही परिपुष्ट होती है कुन्तीपुत्र अर्जुन के रोम रोम से श्रीकृष्णनाम की ध्वनि निकलती थी अतः वे भी परमभगवतों में परिगणित है विघत्स्व कठायितमेषु में वरः 4/20/24 में भगवान् का यश अलग अलग सुनने के लिये दस हजार कानों को प्रदान करने का प्रभू से वर मांगने वाले महाराज पृभुश्री नाम प्रेमी भक्तों में से एक है राम कास्मरण करना लाभप्रद होता है 12 घोर अंधकार में डाकू तथा शत्रुओं की ओर से बाधा की सम्भावना होने पर मनुष्य बार बार नरसिंह कृष्ण राम सर्वातिहर महेश्वर महावीर नाम का स्मरण करना चाहिये। 13 घर या गांव में आग लग जाने पर जलशयी पुष्ण्डरीक्षाक्ष का स्मरण करने से विष का विष रक्षा के लिये गुरूध्वज विषहर नाम के बारम्बार स्मरण करने से विष का प्रभाव दूर हो जाता है।

भगवन्नाममहिमा ही तो निरूपित की है भगवन्नाम ध्वनि करते हुये खौलते तेल के कडाह में कूदने वाले भक्त श्रेष्ठ सुधन्वा को लगभग सभी भगवत्प्रेमी जानते है अद्भुत राम नाम के अंक बडी है राम नाथ की ओर भरोसो राम नाम को भारी रे मन कृष्ण नाम कहि लीजे तथा सोई भलों जो रामहि गावै (सूरसागर) आदि के द्वारा भक्त प्रवर श्री सूरदास जी मथुरा के श्री छतिस्वामी जी अयोध्या के प्राच्य सन्त श्री रसरंगमणि जी दक्षिणात्य श्री गदाधर भट्ट वृन्दावनवासी श्री गुणमंजरीदास श्री हठी जी परम् भक्ता मीराबाई भक्त नामदेव नरसी मेहता रहीमदास हरिदास, कबीरदास, कमाल, रैदास, धर्मदास, सन्त मलूकदास यारी साहब पलटूदास, बुल्लासाहब, भीखासाहव, धरनीदास, जिन्होने विनय पत्रिका के कुछ पदों में ही सहसाधिक भगवन्नामों का उल्लेख किया है।

(ग)– लोक कल्याण की दृष्टि से भगवन्नाम का महत्वः–

लोक कल्याण की दृष्टि से भुवनमंगलः अर्थात भुवनों (समस्त लोको) के कल्याणककर्ता भगवान के विविध नामों की विविध कार्यो के लिये उपादेयता इस प्रकार शास्त्रनिरूपित है। अभीष्ट कामना की सिद्धि के लिये काम सर्व कामप्रद कान्त सर्वकामफलप्रद कामपाल सर्वपालक हरि ''आनन्द' सच्चिदानन्द और माधव भक्तार्तिहर इन नामों का जय करना चाहिये 2– शत्रओं पर विजय प्राप्त करने के लिये मनुष्यों को हरि, विष्णु, कृष्ण, रामूः शत्रुनिषूदन शत्रुघ्न, नृसिंह विक्रम इत्यादि भगवन्नामों का जय करना चाहिये, 3– विद्याप्राप्ति के लिये विद्यार्थी को पुरूषोत्मक शिव, नारायण, राम नाम का जय करना चाहिये– 4– बन्धन में पडे हुये मनुष्य को बन्धन से मुक्ति के लिये दामोदर अपेक्षित विशालाक्ष, त्रयम्बक् नाम का जप करना अपेक्षित विशालाक्ष कमलनयन, नामक भगवन्नामों का जप करना लाभकारी होगा। 6– संसार में भयावह स्थिति में भवभीति निवारणार्थ हृषीकेश भवभीतिभंजक, पीडाहर सौख्यकर अमृत नामों का स्मरण अभीष्ट है, 8– समरभूमि में सफलता के लिये अपराजित अरिसूदन विजप्रद जिष्णु नाम का स्मरण अप्रेक्षित है। 9– पूर्व पश्चिम, उत्तर या दक्षिण दिशा में प्रस्थान करते समय कल्याणकामी व्यक्ति नित्य चक्री (चक्रपाणि) गदी गदापाणि कौमोदकीघार शांगी (शांगघर) तथा खडगी (खडगघर) इन नामों का स्मरण करें। 10– संसार के समस्त व्यवहारों में सफलता हेतु सदैव प्रेमभाव से अजित अधिप, सच्चिदानन्छ सर्वप्रीतिकर आनन्दकन्द हृदयेश्वर तथा सर्वेश्वर नामो का स्मरण अमीष्ट है 11 छीक लेने तथा लडखडाने आदि के समय ग्रहपीडा तथा दैवी बाधाओं से निवृत्ति के लिये पूर्णमनोयोग से सदा नारायण अच्युत पुष्पुत पुण्डरीकाक्ष जनार्दन राम का स्मरण करना लाभप्रद होता है, 12– घोर अंधकार में डाकू तथा शत्रुओं की ओर से बाधा की सम्भावना होने पर मनुष्य की बार बार नरसिंह कृष्ण राम, सर्वार्तिहार महेश्वर महावीर नाम का स्मरण करना चाहिये। 13. घर या गांव स्मरण करने से विष का प्रभाव दूर हो जाता है 14. स्नान देवपूजा हवनु प्रणाम तथा प्रदक्षिण करते समय मनुष्य सदा नारायण, श्रीधर, पुरूषोत्तम शार्गधर, वामन, नृसिंह, रामचन्द्र, और खडगी का स्मरण करें, 17. महासागर आदि में गिर जाने पर मनुष्य पर्यकशायी, (शेषशायी) अमृत, अच्युत का स्मरण करें, 18. समस्त कार्यो की सम्पन्नता के लिये मनुष्य को बलभद्र भरत, हनुमान, का स्मरण करना चाहिये। 19. सब प्रकार के अभ्युदय के लिये श्रीश (श्रीपति) श्रीराम, अच्युत, माधव,

नारायण, का उच्यस्वर से कीर्तन करना चाहिये, 20. सब प्रकार के अरिष्टों (अमंगलों) के निवारण के लिये सदैव विशोक (अशोक) सच्चिादानन्द धमृत, अच्युत नाम का स्मरण करें, 21. किसी निर्जन स्थान में पहुॅचने पर आंधी तूफान अग्नि जल तथा बन्धन आदि के कारण मृत्यु या प्राण संकट की स्थिति में बुद्धिमान मनुष्य को बासुदेव श्रीराम, सर्वबाधाहार शंकर जनार्दन, नाम का स्मरण करना चाहिये, ऐसा करने समस्त बाधायें दूर हो जाती है।

उपसंहार–

ज्ञान के द्वारा माया को ठीक उसी प्रकार से नहीं जाना जा सकता है, जिस प्रकार दीपक के द्वारा अंधकार को नहीं देखा जा सकता है अज्ञान ज्ञान के उदित होने पर उसी प्रकार नष्ट हो जाता है जिस प्रकार सूर्योदय होने पर अंधकार नष्ट हो जाता है कहा भी गया है–

''अज्ञान ज्ञातुभिच्छेद् यो ज्ञानेनात्यन्म्मूठघीः।
स तु नूनं पश्येछीपेनोत्तमतेजसा।।
सेयं भ्रान्तिर्निरालम्बा सर्वन्यायविरोधिनी।।'

भावरूप –अज्ञान का अभाव मात्र नहीं है। यह अज्ञान भाव रूप है क्योंकि जगत प्रपंच को उत्पन्न करने वाली माया को माया की भाव रूपना नहीं कहा सकता है मैं अज्ञ हूं इत्यादि सामान्य अनुभवों से भी माया की भावरूपता सिद्ध हो जाती है मै अज्ञ हूं, इत्यादि सामान्य अनुभवों से भी माया की भावरूपता सिद्ध हो जाती है। एक अन्य प्रमाण भी दिया जा सकता है शयन के पश्चात् जागने पर हम यह अनुभव करते है कि मैने कुछ नहीं जाना इस प्रकार की स्मृति पूर्व अनुभव करते है, कि मैंने कुछ नहीं जाना इस प्रकार की स्मृति पूर्व अनुभव पर ही आधारित है यह अनुभव अभाव रूप न होकर भाव रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता है। इसलिये ग्रन्थकार ने इसे यात् किंचित कहा है, माया के वैचित्य् के विषय में तैत्तिरीयोपनिषद् में भी कहा गया है।

''नसद्रुपा ना सद्रुपा माया नैवोभयात्मिका।
सदसद्म्याम अनिर्वाच्या मिथ्याभूता सनातनी।।''

बेदान्त दर्शन में प्रतिपादित माया की विशेषतायें निम्नलिखित है–

संदर्भ–

1. बराह. अ.4
2. सा. का. 5 / 25
3. सा.का. 6 / 27
4. सा.का. 7 / 27
5. सा. का. 6 / 21
6– वरः 4 / 20 / 214
7– म.का. 7 / 24 / 40
8– रामा. सा. का. 9 / 30
9– मानस. बाल का. 5 / 26

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com